

जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- 10

जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ (प्रवचन)

जीवंत विभूतियों से भावभरी अपेक्षाएँ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो ! भगवान ने गीता में 'विभूति योग' वाले दसवें अध्याय में एक बात बताई है कि जो कुछ भी यहाँ श्रेष्ठ दिखाई पड़ता है, ज्यादा चमकदार दिखाई पड़ता है, वह मेरा ही विशेष अंश है। जहाँ कहीं भी चमक ज्यादा दिखाई पड़ती है, वह मेरा विशेष अंश है। उन्होंने कहा, वृक्षों में मैं पीपल हूँ। छलों में मैं जुआ हूँ। वेदों में मैं सामवेद हूँ। साँपों में वासुकी मैं हूँ। अमुक में अमुक मैं हूँ आदि। मुझमें ये सारी विशेषताएँ हैं। मित्रो ! आपको जहाँ कहीं भी चमक दिखाई पड़ती है, वो सब भगवान की विशेष दिव्य विभूतियाँ हैं और जहाँ कहीं भी जितना अधिक विभूतियों का अंश है, यह मानकर के हमको चलना

पड़ेगा कि यहाँ इस जन्म में अथवा पहले जन्मों में इन्होंने किसी प्रकार से इस संपत्ति का उपार्जन किया है। अगर यह उपार्जन इन्होंने नहीं किया है, तो सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा उनमें ये विशेषता क्यों दिखाई पड़ती है ? जिनके अंदर कुछ विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं, मित्रो ! उनके कुछ विशेष कर्तव्य और विशेष जिम्मेदारियाँ हैं। इसलिए उनको उद्बोधन करना चाहिए। उन लोगों को, जिनके अंदर कुछ विशेष प्रभाव और विशेष चमक दिखाई पड़ती है।

संपदा बनाम विभूति

मित्रो ! विशेष प्रभाव और विशेष चमक क्या है ? वह है जिनको हम विभूतियाँ कहते हैं। कुछ संपदाएँ होती हैं, कुछ विभूतियाँ होती हैं। संपदाएँ क्या होती हैं और विभूतियाँ क्या होती हैं ? संपदा उसे कहते हैं जो कि बाप-दादों की है। वे उसे छोड़कर चले जाते हैं और हम उस कमाई को बैठकर खाया करते हैं, ये संपदाएँ हैं। ये स्त्रियों को भी मिल जाती हैं, बच्चों को भी मिल जाती हैं। ये कोढ़ियों को भी

मिल जाती हैं, अंधों को मिल जाती हैं और पंगु को भी मिल जाती हैं, गूंगे-बहरे को भी मिल जाती हैं। गूंगे-बहरे भी कई बार जुआ खेलते हैं और लाटरी लगाते हैं। लाटरी लगाने के बाद में उनको रुपया भी मिल जाता है। न मालूम किसको क्या मिल जाता है बाप-दादों की कमाई से? बाप-दादों की कमाई से मिनिस्ट्रों के लड़के-लड़कियों को ऐसे-ऐसे काम मिल जाते हैं, ऐसे-ऐसे धंधे मिल जाते हैं, जिससे उनको घर बैठे लाखों रुपये की आमदनी होती रहती है। इसे क्या कहते हैं? इसे हम संपदा कहते हैं।

किसी के पास जमीन है। भगवान की कृपा से उस साल अच्छी वर्षा हो गई, तो दो सौ क्विंटल अनाज पैदा हो गया। दो सौ क्विंटल अनाज बिक गया, तो ढेरों पैसा आ गया और उसे बैंक में जमा करा दिया। मकान बन गया, ये बन गया वो बन गया। पैसे का खेल बन गया। क्या कहता हूँ मैं इनको? इनको मैं संपत्तियाँ कहता हूँ। संपत्ति जमीन में गड़ी हुई मिल सकती है, बाप-दादों की उत्तराधिकार में भी मिल

सकती है और किसी बड़े आदमी की कृपा एवं आशीर्वाद से भी मिल सकती है। संपत्ति किसी भी तरीके से मिल सकती है, किंतु संपत्तियों का कोई मूल्य नहीं है, विभूतियों का मूल्य है। विभूतियाँ जहाँ कहीं भी दिखाई पड़ें, उनको आप यह मानकर चलना कि वे भगवान का विशेष अंश हैं। विशेष अंश जो उनके भीतर है, वह जहाँ कहीं भी हो, उस अंश को जाग्रत करना, उसको उद्बोधन करना और सोए हुआ को जगाना हमारा-आपका विशेष काम है।

साथियो ! रावण के घर में ढेरों के ढेरों आदमी थे। सुना है एक लाख बच्चे थे और सवा लाख नाती-पोते थे, लेकिन जब रामचंद्र जी से लड़ाई हो गई और दोनों ओर की सेनाएँ खड़ी हो गई, तो उसने देखा कि हमारे पास एक ही सहायक, एक ही मजबूत और जबरदस्त आदमी है, उसको जगाया जाना चाहिए और उसकी खुशामद की जानी चाहिए। उसकी खुशामद की जाने लगी, उसे जगाया जाने लगा। कौन आदमी था वह ? उसका नाम था कुंभकरण। वह छह महीने

जागा करता था। रावण को यह विचार आया कि कुंभकरण यदि जागकर के खड़ा हो जाए, तो सारे रीछ-बंदरों को एक ही दिन में मारकर खा जाएगा। एक ही दिन में सफाया कर देगा और लड़ना भी नहीं पड़ेगा और रामचंद्र जी की सेना का सफाया हो जाएगा। सुना है, इसीलिए उसके ऊपर बैल, घोड़े और हाथियों को चलाना पड़ा था, ताकि कुंभकरण की नींद छह महीने पहले ही खुल जाए और वह उठकर खड़ा हो जाए। अगर वह तुरंत उठकर खड़ा हो गया होता, जाग गया होता, तो रामचंद्र जी की सेना के लिए मुसीबत खड़ी कर दी होती, लेकिन भगवान की कृपा ऐसी हुई, कि भगवान का जोश और प्रताप ऐसा हुआ कि वह काफी देर से जागा। तब तक रावण युद्ध हार चुका था। इसीलिए रावण मारा गया, मेघनाद मारा गया और सारी लंका तहस-नहस हो गई।

विभूतियान जागें

मित्रो! हमको समाज में सोए हुए, गड़े हुए कुंभकरणों को जगाना चाहिए। कुंभकरणों की कमी

है क्या ? नहीं, इनकी कमी नहीं है, पर वे सो गए हैं। हमारा एक काम यह भी होना चाहिए कि जहाँ कहीं भी आपको विभूतिवान मनुष्य दिखाई पड़ें, तो आपको उनके पास बार-बार चक्कर काटना चाहिए और बार-बार उनकी खुशामद करनी चाहिए।

विभूतिवान लोगों में एक तबके के वे लोग आते हैं, जिनको हम विचारवान कहते हैं, समझदार कहते हैं। समझदार मनुष्य इस ओर चल पड़ें, तो भी गजब ढा देते हैं और उस ओर चल पड़ें, तो भी गजब ढा देते हैं। मोहम्मद अली जिन्ना बड़े समझदार आदमी थे और बड़े अक्लमंद आदमी थे। मालवार हिल के ऊपर मुंबई में उनकी कोठी बनी हुई है। उनके यहाँ चालीस जूनियर वकील काम करते थे और केस तैयार करते थे। मोहम्मद अली जिन्ना केवल बहस करने के लिए हाईकोर्ट में जाते थे और एक-एक केस का हजारों रुपया वसूल करते थे, उस जमाने में। मोतीलाल नेहरू के मुकाबले के आदमी थे। उनमें बड़ी अक्ल थी, बड़े दिमाग वाले थे। बड़ा

दिमाग वाला, अक्ल वाला मनुष्य इधर को चले, तो भी गजब और उधर को चले, तो भी गजब। सही भी कर सकता था वह तथा गलत भी। यही हुआ।

मोहम्मद अली जिन्ना एक दिन खड़े हो गए और पाकिस्तान की वकालत करने लगे, पाकिस्तान की हिमायत करने लगे। परिणाम क्या हुआ ? परिणाम यह हुआ कि सारे पाकपरस्तों के अंदर उन्होंने एक ऐसी बगावत का माद्दा पैदा कर दिया, ऐसी लड़ाई पैदा कर दी, जेहाद पैदा कर दी और न जाने क्या-क्या पैदा कर दिया कि एक ही देश के लोग एकदूसरे के खूनी हो गए, बागी हो गए। खूनी और बागी होकर के जहाँ-तहाँ दंगे करने लगे। आखिर में गांधीजी को यह बात मंजूर करनी पड़ी कि पाकिस्तान बनकर ही रहेगा। निर्णय सही था कि गलत, यह चर्चा का विषय नहीं है। वास्तविकता यह जाननी चाहिए कि यह जहर किसने बोया ? यह जहर उस आदमी ने बोया, जिसको हम समझदार कहते हैं और अक्लमंद कहते हैं, मोहम्मद अली जिन्ना कहते

हैं। यह तो मैं उदाहरण दे रहा हूँ। मनुष्यों का क्या उदाहरण दूँ, मैं तो समझदारी का उदाहरण दे रहा हूँ।
कीमत सही अवल की

समझदारी जहाँ कहीं भी होगी, न जाने क्या से क्या करती चली जाएगी? समझदार आदमी आर्थिक क्षेत्र में चला जाएगा, तो वो मोनार्क पैदा हो जाएगा और हेनरी फोर्ड पैदा हो जाएगा। पहले ये छोटे-छोटे आदमी थे। नवसारी गुजरात का एक नन्हा सा आदमी, जरा सा आदमी और समझदार आदमी अगर व्यापार क्षेत्र में चला जाएगा, तो उसका नाम जमशेद जी टाटा होता चला जाएगा। राजस्थान का एक अदना सा आदमी जुगल किशोर बिड़ला होता चला जाएगा। अगर आदमी के अंदर गहरी समझदारी हो तब, तब एक नन्हा सा आदमी, जरा सा आदमी, दो कौड़ी का आदमी जिधर चलेगा, अपनी समझदारी के साथ, वह गजब ढाता हुआ चला जाएगा।

मित्रो! गहरी समझदारी की बड़ी कीमत है।
गहरी समझदारी वाले सुभाषचंद्र बोस गजब ढाते

हुए चले गए। सरदार पटेल एक मामूली से वकील। यों तो दुनिया में एक ही नहीं, बहुत सारे वकील हुए हैं, लेकिन पटेल ने अपनी क्षमता और प्रतिभा यदि वकालत में खरच की होती, तो शायद अपनी समझदार अक्ल की कीमत एक हजार रुपया महीना वसूल कर ली होती और उन रुपयों को वसूल करने के बाद में मालदार हो गए होते और उनका बेटा शायद विलायत में पढ़कर आ जाता और वह भी वकील हो सकता था। उनकी हवेली भी हो सकती थी और घर पर मोटरें भी हो सकती थीं, लेकिन वही सरदार पटेल अपनी समझदारी को और अपनी बुद्धिमानी को लेकर खड़े हो गए। कहाँ खड़े हो गए? वकालत करने के लिए। किसकी वकालत करने के लिए? कांग्रेस की वकालत करने के लिए और आजादी की वकालत करने के लिए। जब वे वकालत करने के लिए खड़े हो गए, तो कितनी जबरदस्त बैरिस्टरी की और किस तरीके से वकालत की और किस तरीके से तर्क पेश किए और किस तरीके से उन

फिजाँ पैदा की कि हिंदुस्तान की दिशा ही मोड़ दी और न जाने क्या से क्या हो गया ?

मित्रो ! अक्ल बड़ी जबरदस्त है और आदमी का प्रभाव, जिसको मैं प्रतिभा कहता हूँ, विभूति कहता हूँ, यह विभूति बड़ी समझदारी से भरी है। अगर यह विभूति आदमी के अंदर हो, जिसको मैं आदमी का तेज कहता हूँ, चमक कहता हूँ, तो वह आदमी जहाँ कहीं भी जाएगा, वो टॉप करेगा। वह टॉप से कम कर ही नहीं सकता। सूरदास जब वेश्यागामी थे, बिल्वमंगल थे, तो उन्होंने अति कर डाली और सीमा से बाहर चले गए। वहाँ तक चले गए जहाँ तक कि अपनी धर्मपत्नी के कंधे पर बैठकर वहाँ गए, जहाँ उनके पिताजी का श्राद्ध हो रहा था। वहाँ भी पिताजी के श्राद्ध के समय भी वे वेश्यागमन के लिए चले गए। श्राद्ध करने के लिए भी नहीं आए। अति हो गई।

प्रतिभाएँ सदैव शीर्ष पर पहुँचीं

और तुलसीदास ? तुलसीदास जी भी जिजीविषा के मोह में पड़े हुए थे। सारी क्षमता और

सारी प्रतिभा इसी में लग रही थी। एक बार उनको अपनी पत्नी की याद आई। वह अपने मायके गई हुई थी। नदी बह रही थी। वे नदी में कूद पड़े। नदी में कूदने पर देखा कि अब हम डूबने वाले हैं और कोई नाव भी नहीं मिल रही है। तभी कोई मुरदा बहता हुआ चला आ रहा था, बस वे उस मुरदे के ऊपर सवार हो गए और तैरकर नदी पार कर ली। उनकी बीबी छत पर सो रही थी। वहाँ जाने के लिए उन्हें सीढ़ी नहीं दिखाई पड़ी, रास्ता दिखाई नहीं पड़ा। वहाँ परनाले के ऊपर एक साँप टँगा हुआ था। उन्होंने साँप को पकड़ा और साँप के द्वारा उछलकर छत पर जा पहुँचे। कौन जा पहुँचे? तुलसीदास। यही तुलसीदास जब हिम्मत वाले, साहस वाले तुलसीदास बन गए, प्रतिभा वाले तुलसीदास बन गए, तब वे संत हो गए।

इसी तरह सूरदास, प्रतिभा वाले और हिम्मत वाले सूरदास जब खड़े हो गए और जो भी दिशा उन्होंने पकड़ ली, उसमें उन्होंने टॉप किया। सूरदास

ने जब अपने आप को सँभाल लिया और अपने आप को बदल लिया, तब उन्होंने टॉप किया। टॉप से कम में तो वे रह ही नहीं सकते। वही बिल्वमंगल जब वेश्यागामी था तो पहले नंबर का और जब संत बना तब भी पहले नंबर का। पहले नंबर का क्यों? इसलिए कि वह भगवान का भक्त हो गया। तो फिर वह ऐसा मजेदार भक्त हुआ कि उसने वह काम कर दिखाए, जिस पर हमको अचंभा होता है। हिम्मत वाला और दिलेर आदमी जो काम कर सकता है, मामूली आदमी उसे नहीं कर सकता। उसने अपनी आँखें गरम सलाखें डालकर फोड़ डालीं। हम और आप कर सकते हैं क्या? नहीं कर सकते। ऐसा कोई दिलेर आदमी ही कर सकता है। उसने दिलेरी के साथ और तन्मयता के साथ ऐसी मजबूत भक्ति की कि श्रीकृष्ण भगवान को भागकर आना पड़ा और बच्चे के रूप में, जिनको कि वे अपना इष्टदेव मानते थे, उसी रूप में उनकी सहायता करनी पड़ी। आँखों के अंधे सूरदास की लाठी पकड़कर के हर कार्य में

सहायता करते थे और सारा इंतजाम किया करते थे। भगवान उनकी नौकरी बजाया करते थे।

कौन से सूरदास की? उस सूरदास की, जो प्रतिभावान था। मैं किसकी प्रशंसा कर रहा हूँ? भक्ति की? भक्ति की बाद में, सबसे पहले प्रतिभा की, समझदारी की। प्रतिभा की बात मैं कह रहा हूँ। प्रतिभा अपने आप में एक जबरदस्त वस्तु है। वह जहाँ कहीं भी चली जाएगी, जिस दिशा में भी चली जाएगी, चाहे वह जहाँ कहीं भी जाएगी, पहले नंबर का काम करेगी। तुलसीदास ने क्या काम किया? तुलसीदास ने जब अपनी दिशाएँ बदल दीं, जब उनकी बीबी ने कहा, नहीं, तुम्हारे लिए ये मुनासिब नहीं है। क्या तुम इसी तरीके से वासना में अपनी जिंदगी खत्म कर दोगे? तुमको भगवान की भक्ति में लग जाना चाहिए और जितना हमको प्यार करते हो, उतना ही भगवान से करो, तो मजा आ जाए और तुम्हारी जिंदगी बदल जाए। उनको यह बात चुभ गई। हमको और आपको चुभती है

क्या ? नहीं चुभती। हमारी औरतें सौ गालियाँ देती रहती हैं और फिर हम ऐसे ही हाथ-मुँह धोकर के आ बैठते हैं। वह फिर गाली सुनाती है और गुस्सा होकर के चले जाते हैं और कहते हैं कि फिर तेरे घर नहीं आएँगे और बस वह जाता है और दुकान पर बैठा बीड़ी पीता रहता है। शाम को घूम-फिरकर फिर आ जाता है। क्यों फिर आ गए ? आ गए, क्योंकि उसके अंदर वह चीज नहीं है, जिसे जिंदगी कहते हैं।

जिंदगी वाले इनसान—महामानव

मित्रो ! जिंदगी की बड़ी कीमत है। जिंदगी लाखों रुपये की कीमत की है, करोड़ों रुपये की है, अरबों-खरबों रुपये की कीमत की है। तुलसीदास भी जिंदगी वाला इनसान था। वासना के लिए जब व्याकुल हुआ, तो ऐसा हुआ कि बस हैरान ही हैरान, परेशान ही परेशान और जब भगवान की भक्ति में लगा, तो हमारी और आपकी जैसी भक्ति नहीं थी। उसकी माला फिर रही है इधर और मन

फिर रहा है उधर। मनके फिर रहे हैं इधर और सिर खुजा रहे हैं उधर। भजन कर रहे हैं इधर और पीठ खुजा रहे हैं उधर। भला ऐसी कोई भक्ति होती है? तुलसीदास ने भक्ति की, तो कैसी मजेदार भक्ति की कि बस पीपल के पेड़ पर से, बेल के पेड़ पर से कौन आ गया? भूत आ गया। उन्होंने कहा कि हमको भगवान के दर्शन करा दो। उस भूत ने कहा कि भगवान के तो नहीं करा सकते, हनुमान जी के करा सकते हैं। अच्छा! चलो हनुमान जी के ही करा दो।

हनुमान जी वहाँ रामायण सुनने जाते थे। उसने उनके दर्शन करा दिए। तुलसीदास ने हनुमान जी को पकड़ लिया और कहा कि हमको रामचंद्र जी के दर्शन करा दीजिए। आपने पढ़ा है न तुलसीदास जी का जीवन! उन्होंने क्या किया कि रामचंद्र जी का, जिनका कि वे नाम लिया करते थे, उन रामचंद्र जी को पकड़कर ही छोड़ा। उन्होंने कहा कि रामचंद्र जी का भी ठिकाना नहीं है और मेरा भी ठिकाना नहीं है।

दोनों को एक होना होगा या तो मैं रहूँगा या रामचंद्र जी रहेंगे ? या तो हनुमान जी रहेंगे या रामचंद्र जी रहेंगे ? मैं तो लेकर के हटूँगा । भला ऐसे कैसे हो सकता है कि मैं हनुमान चालीसा पढ़ूँगा और हनुमान जी भाग जाएँ और पकड़ में नहीं आएँ ? पकड़ में कैसे नहीं आएँगे ? हनुमान को पकड़ में जरूर आना पड़ेगा । हनुमान जी पकड़ में जरूर आ गए । हनुमान जी पकड़ में नहीं आए, हनुमान जी के ताऊ रामचंद्र जी भी पकड़ में आ गए । दोनों को पकड़ लिया उसने । किसने पकड़ लिया ? तुलसीदास ने । हम और आप पकड़ सकते हैं क्या ? हम और आप नहीं पकड़ सकते । भूत तो पकड़ सकते हैं ? नहीं पकड़ सकते । हनुमान जी को पकड़ लेंगे ? नहीं, हनुमान जी भी पकड़ में नहीं आएँगे और रामचंद्र जी तो, भला कैसे पकड़ में आ सकते हैं ? वे भी नहीं आएँगे ।

दिशा जो बदली, तो गजब हो गया

मित्रो ! क्या वजह है इसकी ? हम में और तुलसीदास जी में क्या अंतर है ? एक अंतर है । नाक,

आँख, कान, दाँत और हाथ-पाँव सब बराबर हैं, पर एक चीज जो उनके अंदर थी, वह हमारे अंदर नहीं है। वह चीज है, जिसे मैं जिंदगी कहता हूँ, जिसको मैं प्रतिभा कहता हूँ, जिसको मैं विभूति कहता हूँ, जिसको मैं लगन कहता हूँ, तन्मयता कहता हूँ, जीवट कहता हूँ। वह जीवट मित्रो! जहाँ कहीं भी होगा, तो वह बड़ा शानदार काम कर रहा होगा और गलत दिशा पकड़ने पर गलत काम भी कर रहा होगा।

अंगुलिमाल पहले नंबर का डाकू था। उसने यह कसम खाई थी कि फोकट में किसी का पैसा नहीं लूँगा। उँगलियाँ काट-काटकर उसकी माला बनाकर वह देवी को रोज चढ़ाया करता था। अगर कोई कहता कि अरे भाई! पैसे ले ले, पर उँगली क्यों काटता है हमारी? वह कहता, वाह! फोकट में, दान में नहीं लेता हूँ। पहले तेरी उँगली काटूँगा, तो मेरी मेहनत हो जाएगी। फिर उस मेहनत का पैसा ले लूँगा। ऐसे मुफ्त में कैसे ले लूँगा किसी का पैसा? इस तरह वह रोज एक साथ उँगलियाँ काट-

काटकर उसकी माला देवी को पहनाया करता था।
कौन? खूँखार अंगुलिमाल डाकू, लेकिन जब उसने
पलटा खाया, तो कैसा जबरदस्त पलटा खाया आपको
मालूम है न? अंगुलिमाल जब तक डाकू था, तो
पहले नंबर का और जब संत हो गया, तो उसने
हिंदुस्तान से आगे जाकर के सारे के सारे विदेशों में,
मिडिल ईस्ट में वो काम किए कि बस, तहलका
मचा दिया। वह जहाँ कहीं भी गया, अपने प्रभाव से
दुनिया को बदलता हुआ चला गया।

मित्रो! क्षमताएँ जिनके अंदर हैं, प्रतिभाएँ जिनके
अंदर हैं, वह कहीं से कहीं जा पहुँचता है। आम्रपाली
जब तक वेश्या रही, तो पहले नंबर की रही। राजकुमार,
राजाओं से लेकर सेठ-साहूकार तक उसकी एक
निगाह के लिए, उसकी एक चितवन और एक इशारे
के लिए ढेरों रुपया खरच कर डालते थे और उसके
गुलाम हो जाया करते थे, लेकिन जब आम्रपाली
अपनी करोड़ों की संपत्ति को लेकर भगवान बुद्ध की
ओर चली गई, तो न जाने क्या से क्या हो गई और

सम्राट अशोक जो था, ऐसा खूनी था कि उसने खानदान के खानदान समाप्त कर दिए थे। सभी शाही खानदानों को एक ओर से उसने मरवा डाला था। मुसलमानों ने एक-आध को मारा था, लेकिन उसने तो किसी को जिंदा ही नहीं छोड़ा। ऐसा खूनी था अशोक। उसने चंगेज खाँ, नादिरशाह और औरंगजेब, सबको एक किनारे रख दिया था। जहाँ कहीं भी हमले किए, वहाँ खून की नदियाँ ही बहाता चला गया।

लेकिन मित्रो! जब उसने पलटा खाया और जब अपने आप में परिवर्तन कर डाला, तो फिर वह कौन हो गया? सम्राट अशोक हो गया, जिसने बौद्ध संघ और बौद्ध धर्म का सारे का सारा संचालन किया। आज जो हमारे झंडे के ऊपर और हमारे सिक्कों-नोटों के ऊपर तीन शेर वाला निशान बना हुआ है, वह सम्राट अशोक की निशानी है और जो हमारे राष्ट्रीय ध्वज पर चौबीस धुरी वाला और चौबीस पंखुड़ी वाला चक्र लगा हुआ है, यह क्या है? यह

सम्राट अशोक के द्वारा पारित किया और प्रतिपादित किया हुआ धर्मचक्र प्रवर्तन है, जिसको हमने राष्ट्रीय झंडे के ऊपर स्थान दिया हुआ है। ये किसकी हिम्मत, किसकी दिलेरी थी, किसकी बहादुरी थी? उसकी थी, जो डाकू था और खूँखार था।

जीवंत बनाम मुरदे

मित्रो! भगवान जहाँ कहीं भी अपना अंश देता है, विभूति देता है, उसके अंदर चमक होती है, लगन होती है, उसके अंदर तड़प होती है और मुरदे? मुरदे हमारे और आपके जैसे होते हैं। साँस लिया करते हैं। भगवान की जब पूजा करते हैं, तो भी ऐसे-ऐसे सिर हिलाते रहते हैं और साँस लेते रहते हैं। सेवा करने जाते हैं, तो वहाँ भी निठल्ले की तरह पड़े रहते हैं। सत्संग करने, शिविर करने आते हैं, तो यहाँ भी मौसी जी-मौसा जी की याद सताती है।

मित्रो! ये क्या होता है? ये मैं किसकी कहानियाँ सुना रहा हूँ? मुरदे की। जिंदा आदमियों की भी कह रहा हूँ। आपके जिम्मे मैं एक काम

सुपुर्द कर रहा हूँ कि जहाँ भी आपको जिंदा आदमी मालूम पड़ें, जिंदादिल आदमी मालूम पड़े, आप उनके पास जाना। आप उनको मेरा संदेश लेकर के जाना और खुशामद करने के लिए जाना और यह कहना कि भगवान ने जो विशेषताएँ आपके अंदर दी हैं, आपके अंदर जो प्रतिभा है, जो क्षमता है और जो आपके अंदर विशेषता है, उसके लिए भगवान ने निमंत्रण दिया है, समय ने निमंत्रण दिया है। युग ने निमंत्रण दिया है, मनुष्य जाति के गिरते हुए भविष्य ने और यह कहा है कि पेट भरने के लिए आपको जिंदा रहना काफी नहीं है। पेट तो मक्खी-मच्छर भी भर लेते हैं, कीड़े-मकोड़े और कुत्ते भी भर लेते हैं। किसी ने जलेबी खा ली तो क्या और मक्का की रोटी खा ली तो क्या? खाने के लिए आदमी को पैदा नहीं किया गया है। औलाद पैदा करने के लिए आदमी को पैदा नहीं किया गया है। खाने के लिए और औलाद पैदा करने के लिए सुअर को पैदा किया गया है, जो एक-एक साल में बारह-बारह बच्चे

पैदा कर देता है। गंदी-संदी चीजें खाकर के भी हट्टा-कट्टा होकर मोटा पड़ा रहता है। पेट भर गया, बस खर्राटे भरता रहता है। पेट भरने के लिए इनसान को पैदा नहीं किया गया है।

हमारे संदेशवाहक बनें

मित्रो! इनसान बड़े कामों के लिए पैदा किया है। इनसान की जिंदगी कई लाख योनियों में घूमने के बाद आती है। एकाएक कहाँ आ पाती है। इसलिए मित्रो! वहाँ हमारा संदेश लेकर जाना, युग की पुकार लेकर के जाना। वक्त की पुकार लेकर के जाना और यह कहना कि आपको समय ने पुकारा है, युग ने पुकारा है, राष्ट्र ने पुकारा है, गुरुजी ने पुकारा है। अगर आप उनकी पुकार सुन सकते हों, अगर आपके कान हैं, अगर आपके अंदर दिल है; अगर आपके पास कान नहीं हैं, दिल नहीं है, तो हम क्या कह सकते हैं? फिर कौन आदमी सुनेगा? रामायण की कथा हम सुन लेते हैं और जैसे ही आते हैं, पल्ला झाड़कर के आ जाते हैं। भागवत की कथा हम

सुनकर के आते हैं, व्याख्यान हम सुनकर के आते हैं और जैसे ही आते हैं, पल्ला झाड़कर के आते हैं। चिकने घड़े के तरीके से हमारे-आपके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

मित्रो! आप वहाँ जाना और लोगों से यह कहना कि अगर कहीं आपके अंदर जिंदादिली हो, तो आपको समय की पुकार सुननी चाहिए और युग की पुकार सुननी चाहिए। समय की माँग को पूरा करना चाहिए और युग की माँग को पूरा करना चाहिए और महाकाल ने, भगवान ने जहाँ आपको बुलाया है, वहाँ आपको चलना चाहिए। हनुमान जी भगवान की पुकार सुनकर चले गए थे, रीछ और बंदर चले गए थे, गिलहरी चली गई थी। आपके लिए क्या यह संभव नहीं है? क्या आप इस लोभ और मोह से, अपने वासना और तृष्णा के बंधनों को काटते हुए अंगद के तरीके से चलने के लिए तैयार हैं?

मित्रो! मैं आपको अंगद के तरीके से संदेशवाहक बनाकर के भेजता हूँ। मेरे गुरु ने मुझे

संदेशवाहक बनाकर भेजा। हिंदुस्तान से बाहर कई बार अंगद की तरह से मैं केवल संदेशवाहक के रूप में गया हूँ। मैंने कोई व्याख्यान नहीं दिए और न संगठन किए। सारे के सारे देशों में, विदेशों में और न जाने कहाँ से कहाँ गया, लेकिन अपने गुरु का संदेश लेकर के गया। मैंने लोगों से कहा, देखो अपने को बदल दो। समय बदल रहा है। परिस्थितियाँ बदल रही हैं। धन किसी के पास रहने वाला नहीं है। अंगले दिनों में, थोड़े दिनों में आप देखना कि धन किस तरीके से गायब हो जाता है। राजाओं के राज किस तरीके से चले गए, यह हमने और आपने देख लिया। आपने देखा कि थोड़े दिनों पहले जो लोग राजा कहलाते थे, सोने-चाँदी की तलवारें लेकर हाथी पर चला करते थे, आज वे किस तरीके से अपनी दोनों वक्त की रोटी की जुगाड़ कर रहे हैं।

साथियो! जहाँ कहीं भी जाएँगे, वहाँ आप लोगों से कहना कि समय बहुत जबरदस्त है। समय सबसे बड़ा है। धन बड़ा नहीं है। जहाँ कहीं भी

विभूतियाँ आपको दिखाई पड़ती हों, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना, जैसे कि हमारे गुरुजी ने सारी दुनिया के जबरदस्त आदमियों के पास और भावनाशील आदमियों के पास हमको संदेश देकर के भेजा।

मित्रो! आपको समय से पहले बदल जाना चाहिए, नहीं तो आपको पश्चात्ताप ज्यादा करना पड़ेगा। जब कोई डाकू चीजें छीन ले जाता है, तो आदमी को ज्यादा अफसोस होता है, लेकिन अगर अपने हाथों से किसी भिखारी को दे देता है, स्कूल की इमारत बनाने के लिए दे देता है, तो उसको संतोष होता है। पैसा तो चला गया न, चाहे वह डाकू ले गया हो तो भी और चाहे स्कूल बनाने के लिए दे दिया तो भी। लेकिन अपने हाथ से देने पर संतोष रहता है। अतः आपको लोगों से यह कहने के लिए जाना है कि अब युग बदल रहा है, समय बदल रहा है, युग की धाराएँ बदल रही हैं, धन के बारे में मूल्यांकन बदल रहा है। धन लोगों के पास

रहने वाला नहीं है। धन बहुत तेजी से चला जाने वाला है। आप देख नहीं रहे हैं क्या? गवर्नमेंट क्या-क्या कर रही है? मृत्यु टैक्स लगा रही है; संपत्ति टैक्स लगा रही है और दूसरे टैक्स लगा रही है। अब अगले दिनों जो गवर्नमेंट आने वाली है, अगले दिनों जो समय आने वाला है, उसमें रसिया वाला कानून लागू हो जाएगा, चाइना वाला कानून लागू हो जाएगा। हमको और आपको बस हाथ-पाँव से मेहनत करनी पड़ेगी, परिश्रम करना पड़ेगा और उस मेहनत के बदले में जो खुराक हमको मिलनी चाहिए, जो रोटी मिलनी चाहिए, वह मिल जाएगी। खुराक की सारी की सारी चीजें मिल जाएँगी। वक्त रहते बदलें

साथियो! लोगों से कहना कि आपको भगवान ने जो विभूतियाँ दी हैं, क्षमताएँ दी हैं, उसका सबाब आप उठा सकते हैं, लाभ उठा सकते हैं, जीवात्मा को शांति दे सकते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए, पुण्य के लिए अपने आप को तैयार कर लेना चाहिए,

ताकि आपका अंतःकरण शांति में रहे और समाज को भी आपके बदले का अनुदान मिले और हमारा सिर भी गर्व से ऊँचा उठ जाए। समय से पहले हम अंगद के तरीके से इसीलिए आपके पास आए हैं, ताकि यह बता सकें कि आपको वक्त रहते बदल जाना चाहिए और लाभ उठा लेना चाहिए।

इसलिए मित्रो! जहाँ कहीं भी क्षमताएँ दिखाई पड़ें, प्रतिभाएँ दिखाई पड़ें, वहाँ आप हमारे संदेशवाहक के रूप में जाना और खासतौर से उनसे प्रार्थना करना, अनुरोध करना। पूर्व में मैंने विभूतिवानों को संबोधित किया था और उनका आह्वान किया था कि आपकी जरूरत है। भगवान ने आपको विशेषताएँ दी हैं, उसकी उसे जरूरत है, लड़ाई-युद्ध का जब वक्त आता है, तो नौजवानों की भरती कंपलसरी कर दी जाती है और जो लोग बुढ़े होते हैं, उनको छोड़ दिया जाता है। कंपलसरी लड़ाई में सभी नौजवानों को, चौड़े सीने वालों को पकड़ लिया जाता है और फौज में भरती कर लिया जाता है। कब? जब देश

पर दुश्मन का हमला होता है। मित्रो! जो नौजवान हैं, प्रतिभावान हैं, विभूतिवान हैं, उनसे मेरा संदेश कहना। लेकिन जो व्यक्ति मानसिक दृष्टि से बुढ़े हो गए हैं, वे जवान हों तो क्या, सफेद बाल वाले बुढ़े हों तो क्या, हमको उनकी जरूरत नहीं है। क्यों? क्योंकि वे मौत के शिकार हैं। वे इसी के लिए हैं कि जब मौत को चारे की जरूरत पड़े, तो वे उसकी खुराक का काम करें।



युग निर्माण योजना—एक दृष्टि में

हमारे लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- ★ मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण।
- ★ स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज।
- ★ आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुंबकम्।
- ★ एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक शासन।
- ★ जनमानस का भावनात्मक परिष्कार

हमारे आधार :

- ★ व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण।
- ★ नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति, सामाजिक क्रांति।
- ★ धर्मतंत्र से लोकशिक्षण (विचार क्रांति)।

हमारा उद्घोष :

हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा।

हमारा प्रतीक :

लाल मशाल-ज्ञान यज्ञ (आलोक वितरण) का सामूहिक सशक्त प्रयास।

हमारा संविधान :

युग निर्माण सत्संकल्प ।

हमारी ध्रुव मान्यताएँ :

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है ।

जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है ।

आत्मनिर्माण के दो सूत्र :

उत्कृष्ट चिंतन, आदर्श कर्तृत्व ।

जीवन निर्माण के चार स्तंभ :

साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा ।

आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार :

उपासना, साधना, आराधना ।

प्रगतिशील जीवन के चार चरण :

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी ।

संयमशीलता के चार स्तंभ :

इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम, विचार संयम ।

आत्मिक प्रगति के चार चरण :

आत्मचिंतन (आत्मसमीक्षा), आत्मसुधार,
आत्मनिर्माण, आत्मविकास ।

परिवार निर्माण के पंचशील :

श्रमशीलता, सुव्यवस्था, शालीनता (शिष्टता),
सहकारिता, मितव्ययिता।

तीन शरीर :

स्थूल, सूक्ष्म, कारण।

तीन साधना :

ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग।

मानवी सत्ता के तीन पक्ष :

भावना, विचारणा, क्रिया-प्रक्रिया।

उक्त तीनों के परिष्कार के तीन साधन :

श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा।

तीन को सुधारें :

गुण, कर्म, स्वभाव।

तीन को सँवारें :

चिंतन, चरित्र, व्यवहार।

तीन को त्यागें :

- ★ लोभ, मोह, अहंकार।
- ★ वासना, तृष्णा, अहंता।
- ★ पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा।

तीन को धारण करें :

ओजस्, तेजस्, वर्चस्।

तीन सम्माननीय :

संत, सुधारक, शहीद।

जाग्रत आत्माओं का दायित्व :

★ युग धर्म का निर्वाह

★ वयं राष्ट्रे जागृत्याम पुरोहिताः।

हमारी उद्घोषणा :

इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य।

